वर्ष 23 अंक 05
27 मई + जून 2025
एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367
पोस्ट दिनांक 30 जून 2025

ओ३म्

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2021-25
पृष्ठ संख्या 28
एक प्रति 20.00 रु.

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

# वैदिक रवि

## मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

# एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

।। ओ३म्।।

# वैदिक रवि मासिक

वर्ष 23 अंक 03

मई - 2025

(सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्बत् 1,96,08,53,123

विक्रम संवत् 2081

दयानन्दाब्द 199



**सलाहकार मण्डल**

श्री ललित नागर

पं. रामलाल शास्त्री मविद्याभास्करफ

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

**प्रधान सम्पादक**

श्री प्रकाश आर्य

कार्यालय फोन : 0755-4220549

**सम्पादक**

अतुल वर्मा

फोन : 07324-226566

**सह सम्पादक**

श्रीमती डॉ. राकेश शर्मा


**सदस्यता**

एक प्रति ............................ ₹ 20,00

वार्षिक ............................ ₹ 300,00

आजीवन ............................ ₹ 2000,00

**विज्ञापन की दरें**

आवरण पृष्ठ 2 एवं 3 ..................... ₹ 500

पूर्ण पृष्ठ (अन्दर) ..................... ₹ 400

आधा पृष्ठ (अन्दर का) .............. ₹ 250

चौथाई पृष्ठ ............................₹ 150

## अनुक्रमणिका


- सम्पादकीय 04
- प्रजातंत्र का एक पक्षिय स्वरुप 07
- चिन्ता का ईलाज 09
- विवाह संस्कार की मुख्य विधियों में प्रमुख है सप्तपदी 12
- किसे सुनाऊँ व्यथा हृदय की 14
- वेदों की दृष्टि धर्म का स्वरुप 16
- विदेशियों की दृष्टि में गाय 18
- समाचार 21

सम्पादकीय :

# लव जिहाद में दोषी कौन ?

लव जिहाद एक सामान्य रूप से दो युवाओं के आकर्षण का कारण नहीं है। यह एक अन्तर्राष्ट्रीय मजहबी कट्टरता की सोची समझी व्यवस्था का कुचक्र हैं।

इसका सम्बन्ध दुनिया में गैर मुस्लिम लड़कियों को इस्लाम में लाकर उन्हे व उनसे होने वाले बच्चों से इस्लाम की संख्या बढ़ावे यह मिशन चल रहा हैं। जैसे आतंकवाद में भर्ती कर उन्हें ट्रेनिंग और सुविधाएं दी जाती हैं उसी तर्ज पर अनपढ़, बेरोजगार, आवारा गर्दी करने वालों को भी लव जिहाद की ट्रेनिग दी जाती है। उनके द्वारा धर्म परिवर्तन करवाने पर बड़ी मोटी रकम बतौर इनाम दी जाती हैं। ऐसे लड़को को इसके लिए उनके सजने, संवरने सुन्दर दिखने के, आकर्षक व्यक्तित्व बनाने के लिए सब वस्तुएं और साधन उपलब्ध कराये जाते हैं। मोटर सायकिल, मोबाईल, घड़ी महंगे सेन्ट, महंगे कपड़े, जूते और लड़की पर खर्चा करने के लिए जैसे उसको गिफ्ट करने मंहगे होटल में खाना खिलाने पिकनिक स्पाट पर ले जाना आदि आदि यह सब खर्च की व्यवस्था की जाती हैं। ताकि लड़किया उसको किसी धनवान घर का सदस्य समझे यह सब कौन कर रहा है ? एक व्यवस्थित व इस्लाम की जनसंख्या बढ़ाकर अपनी मजहबी कट्टरता के उद्येश्य को धर्म का नाम देकर कुछ संगठन निरन्तर लगे हुए हैं। वे तो इसे अपनी धार्मिक मान्यता मान कर कर रहे किन्तु दूसरा पीड़ित पक्ष जिनकी लड़की बहने इसका शिकार हो रही है वे क्या कर रहे हैं ? इस प्रकार धर्म परिवर्तन करवाना तो गलत है ही किन्तु लापरवाही अति विश्वास के कारण अभिभावक व पीड़िता भी दोषी हैं।

इसमें केवल लव जेहादियों को दोष देना पर्याप्त नहीं हैं। इसमें हमारी बेटियां और अभिभावक भी दोषी हैं। स्वतन्त्रता अच्छी बात है किन्तु स्वतन्त्रता जब स्वच्छन्दता में सीमाएं लांघ जाती है तो वह अभिषाप बन जाती हैं। हम सनातन भारतीय संसकृति के मानने वाले **"यत्र नार्यस्तू पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता"** अर्थात नारी को पूजा योग्य बताते हैं। किन्तु इसकी साथ ही एक मार्ग दर्शन भी नारी के सम्बन्ध में दिया है

जिसमें उसके आचार, विचार, व्यवहार, पहनावें वाणी, शालीनता की सीमाएं है जो उसके व्यक्तित्व को निखारती है उसके प्रति सम्मान भाव निर्मित करती हैं। महिला के सम्बन्ध में कहा **म** से मर्यादा **ही** से हिम्मत, **ला** से लाज – अर्थात मर्यादा, हिम्मत, व लाज यह नारी व्यक्तित्व के अलंकार हैं।

इसका प्रभाव प्राथमिक दृष्टि से ही देखने वाले पर होता हैं। आज कहते हुए अच्छा नहीं लग रहा किन्तु सत्य है हमारी बेटियों का पहनावा उस गरिमा व शालीनता को प्रभावित कर रहा हैं। सुन्दर दिखना, फैशन करना अच्छा है किन्तु उसमें हमारी शालीनता प्रभावित न हो इसका भी ध्यान रखना चाहिए।

अग्नि जब हवन कुण्ड में यज्ञ पात्र में जब सीमा में रहती है तो वह आस्था व श्रद्धा के रूप पूजी जाती है, वह अग्नि कहलाती हैं। किन्तु सीमा तोड़कर अग्नि कुण्ड से बाहर निकल जावे तो वह विनाश कारी हो जाती है, अग्नि नहीं आग कहलाती है, जिसे जल्दी से जल्दी बुझाया जाता हैं फिर उसके प्रति सम्मान नहीं रह जाता।

इसी प्रकार हमारी वाणी, हमारा पहनावा, और संगति इस पर बहुत ध्यान देना जरूरी हैं। पाश्चात्य सभ्यता की नकल में अपने को जोड़ना आज कल एडवान्स होने की निशानी मानी जाती हैं। बेटियां तो इसे करती हीं है, माता पिता भी उसमें अपनी मौन स्वीकृति देकर अपने को बड़ा या एड़वान्स बताने में दे देते हैं वे रोकते नहीं हैं।

हमारी बेटियों को किसी से भी मित्रता व व्यवहार बहुत सोच समझ कर करना चाहिए। इस्लाम के कई उदाहरण देखने को मिल रहे है पहले तो कोई मुस्लिम युवक अपनी, मौसी की, मामी की, भाई की बेटी जो बहन होती है भान्जी होती है, बेटी समान भतीजी होती है उनसे शादी करना इस्लाम में उचित माना जाता है कोई आपत्ती नहीं। पर अब तो कई उदाहरण सामने आ रहे है बाप अपनी बेटी से और मां, मौसी, के अपने बेटों से भी शादी कर रहे है, यह क्या हो रहा है ? हिदू समाज में तो यह घृणित और पाप है। इसलिए इस इस विचार धारा का व्यक्ति जहां किसी भी महिला से रिश्ते में हमें अपनी बहन, बेटी, भाभी, मां, काकी, रिश्ते में कुछ भी नाम देकर पुकारे वह विश्वास के लायक नहीं हो सकता हैं। हमारी बच्चियों को यह समझाना चाहिए कि वे जिस गाय माता की पूजा करती हैं वहीं दूसरा मजहब गाय मांस खाना पसन्द करता हैं।

लव जिहाद में मुस्लिम लड़कियां भी हिन्दू लड़कियों की सहेली बनकर मुस्लिम लड़कों से मिलवाने का कार्य कर रही हैं। आज अनेक मुस्लिम लड़के हिन्दू नाम रखकर हाथ में नाड़ा बाधकर, टीका लगाकर हिन्दू बनकर हिन्दू लड़कियों को जाल में फसा रहे हैं।

ऐसी घटनाएं रोज घटित हो रही है किन्तु इससे अभी भी समाज सर्तक नहीं हो रहा हैं। माता पिता अपने बच्चों को उनकी पढ़ाई करवाकर अच्छा पैकेज बनाने, और अन्य बातों का ज्ञान तो देते है किन्तु, संसार में धर्म तो एक ही है वह सनातन धर्म है, सबसे महान है, हमारे पूर्वज इसे ही मानते रहे भगवान राम, भगवान कृष्ण, वीर हनुमान, जैसे इसी सनातन धर्म में हुए, उसका ये गौरव नहीं बताते। यह बाते कौन बताता है? दूसरी ओर आज धर्म के नाम चल रहे मतमतान्तर है, मजहब, सम्प्रदाय हैं। इस दूसरी विचार धारा वालों द्वारा घरों में, मदरसे में, मस्जिद में, मजहबी शिक्षा दी जाती है इस कारण वे अपनी मान्यता में दृढ़ होते हैं।

माता पिता अभिभावको को भी बड़े छोटे भाई बहनों को अपनी बेटी, बहन, को सुरक्षित रखने का प्रयास करना चाहिए। ध्यान रखना होगा वे कपड़े सिलवाने कहां कब, किसके साथ जाती है, टयूशन पढ़ने कब कहां जाती हैं, और कौन पढ़ाता है, कब वापिस घर में आती है, सहेली के जन्म दिन, शादी, या और किसी आयोजन में कब किस स्थान पर जा रही हैं। इसका यह बिल्कुल अर्थ नहीं कि उन पर हम पाबंदी लगा रहे हैं किन्तु उनकी सुरक्षा के लिए उनके साथ भी कोई दरिन्दा किसी प्रकार की हरकत न कर बैठे उनके बचाव के लिए यह सब आवश्यक हैं। एक कहावत है **''नजर हटी दुर्घटना घटी''**

इस प्रकार लव जिहाद करने वाले तो करेगें यह एक षड़यन्त्र योजना बद्ध तरीके से चल रहा हैं जिसे धर्म का एक अंग माना जा रहा हैं। किन्तु हम उसमें सहयोगी अपनी अज्ञानता, अपनी गलतियों, लापरवाही के कारण न बने यहां यह भी महत्व पूर्ण हैं।

आवारा जानवर उसी खेत में घुसते है जिसकी बागड़ (सुरक्षा) कमजोर हो। हो सकता है यह लेख कुछ व्यक्तियों को अच्छा न लगे किन्तु कहा गया –

**''यत्तग्रे विष मिव परिणामे अमृतो तमम्''**

अर्थात प्रारंभ कुछ बाते विष के समान लगती है किन्तु उसका परिणाम अमृत के रूप में छिपा होता हैं।

**प्रकाश आर्य**

# प्रजातंत्र का एकपक्षिय स्वरुप

प्रजातन्त्र का गहरा संबंध हर भारतीय से है। वह इसलिए क्योंकि उसकी जीवन पद्धति एक प्रजातन्त्रीय देश से संबंध रखती है। प्रजातन्त्र (Democrysi) पीछे बनी मूल भावना का प्रत्येक भारतीय के लिए बड़ा महत्व है। जन साधारण को संतुष्टि और गौरव प्रदान करने वाला है। संविधान निर्माताओं ने इसी बात को संविधान के कई अनुच्छेदों में बहुत जोर–शोर से बताया है।

यदि संविधान के शब्द और उसकी भावना के अनुसार जन सामान्य का व्यवहार बन जावे तो रामराज्य के लिए अलग से प्रयास करने की आवश्यकता ही नहीं। सर्वे भवन्तु सुखिनः का सन्देश सार्थक हो सकता है यदि प्रजातन्त्र का समुचित अर्थ व महत्व समझते हुए उसे अमल में लाया जावे तो ?

थोड़ा विचार तो करें कितनी अच्छी व्यवस्था है, इस प्रजातन्त्रीय प्रणाली की, जिसके अनुसार हम ही शासक, हम ही प्रजा, हम देश के, देश हमारा, हम देश के लिए देश हमारे लिए। संक्षेप में गणतन्त्र को समझाने के लिए कहा गया, जनता का, जनता के लिए, जनता के द्वारा। इस भावना को ऊपर वर्णित पंक्तियां मूल रूप को दर्शाती हैं।

गंभीरता से सोचें तो हमारी व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन प्रणाली कैसी हो इसका निर्धारण हमें करने की स्वतन्त्रता है। देश को, समाज को व्यवस्थित कैसे रखा जावे वे सीमाएं और स्वतन्त्रता बनाने का हमें ही अधिकार राष्ट्र के संचालन में किसे बैठाना, किसे हटाना, इसका अधिकार भी हमें प्राप्त। अपनी योग्यता के अनुसार उन्नति कर कोई भी पद प्राप्त करने का संवैधानिक अधिकार हमें प्राप्त। हमें से तात्पर्य प्रत्येक भारतीय जिसे स्वतन्त्र भारत का नागरिक कहलाने का संवैधानिक अधिकार है। यह सब प्राप्त करने के लिए तो अनेक शहादतें हुई उस बन्धन की जंजीर को तोड़ने के लिए बड़ी कुर्बानी हुई।

किन्तु क्या इस श्रेष्ठतम व्यवस्था को देश संचालन में आत्मसात किया है ?

संभवतः प्रत्येक पाठक का उत्तर नकारात्मक ही होगा, होना भी चाहिए, क्योंकि सब व्यवस्थाएं यथार्तता से विमुख हो रही हैं। परिणाम न तो सही है न संतोषजनक है।

प्रजातन्त्र के नाम पर असफल प्रशासनिक व जनोपयोगी व्यवस्था प्रजातन्त्र शब्द

का उपहास बनकर रह गई। आम आदमी को आज लगने लगा कि यदि यही ऐसा ही प्रजातन्त्र है, तो नहीं चाहिये ऐसा प्रजातन्त्र।

शोषण, मानसिक परतन्त्रता, अभाव, भय, अशान्ति, आपसी मतभेदों में जीता हुआ मानव प्रजातन्त्र को अच्छा कहे या बुरा कहे, यह विडम्बना उसके सामने हैं।

हर कोई किसी न किसी रूप में अव्यवस्थाओं का शिकार हो रहा है। समाज गंभीर बीमारी की ओर बढ़ रहा है किन्तु उपचार करने का किसी का विचार ही नहीं है। बीच–बीच में कभी–कभी कोई समाज के दर्द को लेकर चिन्ता करता है, प्रयास करता है। गफलत और नशे में धुत सोये हुओ को जगाने का प्रयास करता है किन्तु न तो समाज उसे सहयोग देता है न समझ पाता है। फिर वह आवाज कमजोर, धीमी और लुप्त हो जाती है।

आखिर कब आएगा होश, आशियाना जल जाने के बाद ! तभी तो सिर छिपाने के लिए कुछ तो करना होगा। बहुत कुछ नष्ट हो चुका परन्तु जो बचा है उसे बचा लेना ही समझदारी है।

प्रजातन्त्र को समझकर अपने अधिकार व कर्तव्यों के प्रति सतर्कता रखना। न अपने अधिकारों पर अतिक्रमण करने दें और न किसी के अधिकारों पर स्वयं अतिक्रमण करें, यही मूल प्रजातन्त्रीय प्रणाली का है।

अपने अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग कर रक्षा, निर्माण, उन्नति हो सकती है इनकी उपेक्षा करके तो दूसरों के हाथ लुटने को अवसर देना होता है।

यही आज समाज में हो रहा है प्रजातन्त्र चन्द हाथों में कैद है होकर उनकी कठपुतली बना हुआ है।

परन्तु 16 वीं लोकसभा के लिए किए गए मतदान में ऐसा लगा कि समाज अपने अधिकारों का महत्व समझ रहा है। प्रजातन्त्र में उसकी स्थिति मात्र मोहताज तक नहीं अपितु शीर्षस्थ राष्ट्र ताज तक भी है। मतदान का इतना अधिक प्रतिशत, आरोप–प्रत्यारोप, लुभावने प्रभाव से मुक्त एक ठोस विचारधारा का चयन, यह सबकुछ सुखद है।

आवश्यकता है प्रजातन्त्र को उसकी सही पहचान दिलाने के लिए राष्ट्र के नागरिकों की सही व स्वतन्त्र विचार शक्ति।

# चिन्ता का ईलाज

– **स्वेट मार्डन**

देखा जाए तो चिन्ता पागलपन का ही दूसरा रूप है। मन की कोई व्यवस्था इतनी हानिकारक नहीं, जितनी चिन्ता की। व्यक्तिगत उन्नति, आनन्द व उपयोगिता को नष्ट करने वाला चिन्ता से बढ़कर कोई शत्रु नहीं। इस बुराई या रोग का इलाज यह है कि अपनी इच्छा शक्ति का इस तरह का अभ्यास डाला जाय कि वह चिन्ता दूर हटती रहे। काम–धन्धे में परिवर्तन करने से भी इसका इलाज सम्भव है। ज्योंही मस्तिष्क के विषय में प्रकृति की ओर से पहली चेतावनी मिले, त्योंही इसका इलाज करने की कोशिश करनी चाहिये। विश्राम चिन्ता का सबसे बड़ा और निश्चित शत्रु है। मनुष्य के लिए सबसे अधिक स्वास्थ्यकारक आदर्श वाक्य है। **"परवाह मत करो"**।

आज के युग में चिन्ता करना पिछड़ेपन की निशानी है। पहले–पहल वाष्प इंजन बना था, तब नब्बे प्रतिशत शक्ति बेकार चली जाती थी, केवल दस प्रतिशत उपयोग में आती थी। और धीरे–धीरे इंजन में सुधार करते–करते आज बिजली का ऐसा इंजन बन चुका है, नब्बे प्रतिशत शक्ति का उपयोग करता है और केवल दस प्रतिशत शक्ति बेकार जाती है। कुछ लोग अपनी शक्तियोंका महत्वपूर्ण प्रतिशत भाग व्यर्थ खो देते हैं। वे व्यर्थ की चिन्ता में, शिकायतों में, मौसम की खराबी के दुःख में अपनी शक्ति का बहुत बड़ा भाग व्यर्थ गंवा देते हैं। परन्तु जो समझदार हैं, वह अपनी प्रायः सारी शक्ति को कार्य में बदल डालते हैं, इससे उनका चरित्र चमक उठता है। जिसे जीने की कला की सच्ची शिक्षा मिल चुकी है, वह अपनी शक्तियों को विघटन में नहीं गंवायेगा, क्योंकि चिन्ता अर्थात् विघटन की यह प्रकिया जीवन की मशीन की तोड़ने–फोड़ने के सिवा और कोई काम नहीं करती।

एक अभिनेत्री ने एक बार कहा था –**चिन्ता हर प्रकार की सुन्दरता की शत्रु**

**है।** पर उसे यह भी कहना चाहिये था कि वह **''हर प्रकार के स्वास्थ्य की शत्रु है।**

एक माता ने एक बार यह बात कही थी कि यदि मैं अपने बच्चों की चिन्ता न करूं तो यह हृदय हीनता मालूम होती है। यह ठीक है कि स्त्रियां अपने बच्चों को बड़े कष्टों और चिन्ताओं से पालती हैं, किन्तु समस्या तो तब उठ खड़ी होती है जब अपनी समस्याओं और कष्टों को भी चिन्ताओं की तरह ही पालने लगती हैं। लेडी हालैण्ड का कथन है कि पालने से कष्ट और चिन्तायें बड़े हो जाते हैं। एक गौरा लॉर्ड सफर में अपने साथ चूहों का पिंजरा रखा करता था, जिससे रास्ते में उसे चूहे न तंग करें। जो लोग इस प्रकार अपने सिर पर कष्टों की चिन्ता का बोझ लादे फिरते हैं, वे उसी लॉर्ड की तरह हैं।

सेने का कथन है – जो समय से पहले चिन्ता करता है आवश्यकता से अधिक चिन्ता करता है।

एक मनुष्य ने मरने से पूर्व कहा था – ''मेरे बच्चों ! लम्बी आयु में, लम्बे जीवन में, मुझे कई बड़े–बड़े कष्ट आये, पर कष्ट मुझे कभी दुबारा नहीं हुए।

फिलाडेल्फिया के एक प्रसिद्ध व्यापारी का कहना था कि उसके पिता पच्चीस वर्ष तक एक मुसीबत की चिन्ता करते रहे पर वास्तव में मुसीबत कभी आई ही नहीं।

हम जीवन के बहुत अधिक भाग को एकदम मुट्ठी में कर लेने का यत्न करते हैं, क्योंकि हम सारे जीवन को एक ही समझते हैं, पर वास्तविकता यह है कि हम एक ही दिन सम्पूर्ण जीवन व्यतीत नहीं करते। जीवन एक मीनाकारी है, जिसमें एक मणि के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी अर्थात् अनेक मणियां अलग–अलग जड़ी जानी चाहिये।

यदि एक घड़ी का वर्षभर का समय जोड़कर उस पर लिख दिया जाये और उसे बन्द कर दिया जाये तो वह घड़ी घड़ी नहीं रह जाती। आज के कष्ट हमें दुःख नहीं देते, बल्कि कल के, आने वाले सप्ताह के और आगामी वर्ष के सम्भावित कष्ट हमारे बालों को सफेद करते हैं। हमारे चेहरे पर झुर्रियां डालते हैं और हमारी गति को रोक देते हैं।

वर्तमान के कष्ट से शायद कभी ही स्त्रायु–कष्ट होता होगा, परन्तु आने वाले कष्टों वा संकटों की आशंका और चिन्ता से अवश्य होता है। जो बहुत दूर की चिन्ता करते हैं, उनका मस्तिष्क थक जाता है। वे पहाड़ी के पास पहुंचने से पहले ही उस पर चढ़ाई करना शुरू कर देते हैं। आज की उन्नति में वे चिन्ता द्वारा जान बूझकर एक बाधक दीवार खड़ी कर देते हैं। वे बन्धन में बन्धकर जीवन बिताते हैं। हो सकता है भूतकाल में कठिनाईयां रही हों, खेद रहे हों, पर उनकी याद से क्या लाभ ? वे तो बीत चुके हैं।

अनदेखी मुसीबतों की चिन्ता करने की अपेक्षा क्यों न अपने वर्तमान सुख पर आनन्द मनाया जाय ? क्यों न इसके विपरीत अपनी आत्मा को आने वाले सुखों और हर्षों के विचार से आनन्दित किया जाय ? इमर्सन का कहना है – मैं भविष्य के विचारों के महलों से आनन्द मनाता हूं क्यों इससे मुझे आराम मिलता है। मैं यह कल्पना नहीं करता कि मुझे भविष्य में रहना पड़ेगा। नित्य चिन्ता द्वारा गड्ढे खोदकर मैं अपने को दयनीय नहीं बनाना चाहता।

यह संसार कैसा है ? जैसा आप इसे समझें। थैकरे का कथन है कि **"यह संसार एक दर्पण के समान है। जैसा आपका मुंह होगा, वैसा ही प्रतिबिम्ब दिखाई देगा।** आप मनहूस चेहरा बनाये रखेगे तो संसार आपको मनहूस एवं आनन्द हीन दिखाई देगा।

**चिन्ता तो जीवन का एक अंग हैं जो प्रत्येक सामान्य ज्ञान रखने वाले के साथ भी जुड़ी है । किन्तु चिन्ता के साथ चिन्तन करना और उसका समर्पित होकर उचित निदान करना भी महत्वपूर्ण है । इसके अभाव में चिन्ता का प्रभाव और बढ़ता रहेगा यह उचित नहीं ।**

# विवाह संस्कार की मुख्य विधियों में प्रमुख हैं सप्तपदी

जीवन में संस्कारों से ही व्यक्ति, परिवार, समाज व्यवस्थित रहता है इसलिए सनातन वैदिक संस्कृति में मनुष्य की शारीरिक, मानसिक, आत्मिक, और सामाजिक तथा राष्ट्रीय उन्नति के लिए सोलह संस्कारों का विधान है। उनमें से एक संस्कार है विवाह संस्कार, और विवाह संस्कार में एक प्रमुख विधि है सप्तपदी हैं। इसमें वर वधु दोनों साथ साथ सात पग चलते है। वर अपनी वधू के दक्षिण स्कंध पर हाथ रखकर वधू को साथ चलने का निर्देश देता हैं। और यह भी बताता है कि चलना कैसे है क्योकि चाल से ही चलन का अर्थात चरित्र का पता चलता हैं। इसीलिए जीवन की सभी क्रियायें चेष्टाए संतुलित होनी चाहिए। हिन्दू विवाह अधिनियम में भी एक वैधानिक विवाह संस्कार में सप्तपदी महत्वपूर्ण विधि है।

वर निर्देश देता है – मा सव्येन दक्षिणमतिक्राम

हे वरानने ! तेरा बाया पैर दाहिने पैर का उल्लंधन न करे।

तू वाममार्गी मत बनना, अर्थात् कभी भी धर्म से विपरीत रास्ते पर मत चलना। हमेशा दक्षिणमार्गी रह, तात्पर्य हमेशा विचार पूर्वक सीधे मार्ग पर (धर्म मार्ग पर) चलती रहना इसीलिए पहले दाहिना पैर आगे बढ़ा।

**प्रथम पग**

**मन्त्र पाठः – ओम् इषे एकपदी भव। सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु पुत्रान् विन्दाव है बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः।**

सर्वरक्षक ! परमात्मा को साक्षी मानकर हम प्रथम पग रखते है हम दोनों उत्तम अन्न की प्राप्ती के लिए मिलकर पुरूषार्थ करेंगे।

"अन्नं वै प्राणः" क्योंकि अन्न ही सब प्राणियों के जीवन का प्रथम आधार हैं। ब्रह्मचारी वानप्रस्थी और सन्यासी तथा अन्य गौ आदि प्राणियों के भी भोजन पालन का महान उत्तरदायित्व गृहस्थ के ऊपर ही होता हैं। जैसे वायु के आश्रय से सब प्राणियों का जीवन होता है वैसे ही गृहस्थ के आश्रय से ही सभी आश्रम चलते हैं। हे देवि ! तू मेरे पावन व्रत में सहयोगी हो इसके लिए परमात्मा तेरे मार्गदर्शक हो, प्रभू कृपा से हम श्रेष्ठ और दीर्घजीवी पुत्र पुत्रियों को प्राप्त करें।

द्वितीय पग

**ओम् ऊर्जे द्विपदी भव सा मामनुव्रता भवविष्णुस्त्वा नयतु पुत्रान् विन्दाव है बहूंस्ते सन्तु जरदष्टयः।**

सर्वरक्षक ! परमात्मा को साक्षी मानकर हम दोनों दृढ़ता पूर्वक दूसरा पग रखते हैं। हम दोनों बल प्राप्ति के लिए मिलकर पुरूषार्थ करेंगे। संसार में बलहीन व्यक्ति को कोई जीने नहीं देता। निर्बल को सब कोई सताते रहते है यह नियम तो जड़ पदार्थो में भी देखा जाता हैं। बड़े वृक्ष के नीचे यदि छोटा पौधा उग जाता है तो बड़ा वृक्ष अपनी लम्बी जड़ो से सारा भोजन पानी खींच लेता है और छोटे पौधे को बढ़ने नहीं देता।

**आगे भी कहा है – ज्वलितोऽग्निं वर्धनाय सखा भवति मारूतः।**

**स एव दीप नशाय कृशे कस्यास्ति सौहृदम्।।**

यदि कही दीपक जल रहा हो तो हवा का झोंका आकर उसे बुझा कर नष्ट कर देता हैं। और यदि वही अग्नि किसी के घर अथवा खेत में लग जाए तो हवा उसकी मित्र बनकर और बढ़ा देती हैं। सर्वत्र देखा जाता है कि निर्बल के सब शत्रु बन जाते है और बलवान के सब मित्र बनना चाहते है। इसीलिए हम दोनों उत्तम सात्विक अन्न फल औषधिवत् भोजन द्वारा बल बुद्धि के लिए प्रयत्न करेंगे।

हे देवि ! तू मेरे पावन व्रत में सहयोगी हो इसके लिए परमात्मा तेरे मार्गदर्शक हो, प्रभू कृपा से हम श्रेष्ठ और दीर्घजीवी पुत्र पुत्रियों को प्राप्त करें।

**क्रमशः..........**

**सुरेशचन्द्र शास्त्री, पुरोहित आर्य समाज जिन्द**

# किसे सुनाऊँ व्यथा हृदय की..

किसे सुनाऊं व्यथा हृदय की, यहां तो सब सोए पड़े हैं।
कर्मवीरों की भूमि में,
अकर्मण्यता के संस्कार पड़े हैं।। ?

जगाऊ कैसे नीन्द से, जो जानबूझ कर सो रहे हैं।
अपने ही आंगन में खुद, कटिले बीज खुद बो रहे हैं।।

चिन्तन–मनन आचार–विचार सब छोड़ चुके हैं।
भूला रहे उन कारणों को, जिनसे वर्षो लुटे हैं।।

मानवता का कद छोटा पर,
अमानुषता के कद बढ़े हैं।
किसे सुनाऊ व्यथा हृदय की..........

अर्थी निकाल इन्सानियत की इन्सान कहला रहे,
जर्जर खण्डहर में बैठकर मन अपना बहला रहे।
चेतन्य समाज को छोड़, अब तो कफन के लिए भी विवाद है।
स्वार्थ, संकीर्णता, धोखे पाखण्ड से घिरा, ये कैसा समाजवाद है,
सेवा शुभ कार्यों से हाथ पीछे, और अत्याचार की ओर बढ़े हैं।
किसे सुनाऊ व्यथा हृदय की.............

लुट गए लुटते जा रहे पर, अभी भी गाफिल से खड़े हैं।
कर्म छोड़ पुरूषार्थ खो, भाग्य की अंगूठी में जड़े हैं।।
तमाम शौर्यता की बातें,
इतिहास बनकर रह गई ।
बुजदिलाना माहौल में पलकर,
बिल्ली भी चूहे से डर रही ।।

नीचे से ऊपर तक इसी रंग में, रंगे हैं।
किसे सुनाऊ व्यथा हृदय की..............

जीवन का उत्थान अपने तक,
सिमटकर रह गया।
सर्वे भवन्तु का सपना,
स्वार्थ सिन्धू में बह गया।।

इसिलिए व्यक्ति से विश्व तक सभी
आज चिन्ता दुखों में पडे हुए हैं
किसे सुनाऊ व्यथा हृदय की..........

– प्रकाश आर्य, महू

# वेदों की दृष्टि धर्म का स्वरुप

हमने ''धर्म'' और 'संस्कृति' शब्दों के मूल अर्थ को नष्ट कर दिया है। हमने सब मतों, मजहबों, सम्प्रदायों, पन्थों, मान्यताओं या दृष्टिकोणों को धर्म मानना शुरू कर दिया है। जबकि धर्म तो केवल कोई एक ही हो सकता है और वह भी वही हो सकता है जो सभी को स्वीकार करने योग्य हो, इसलिए वेद में कहा गया है –

**सा प्रथमा संस्कृतिः विश्ववारा।**

(यजुर्वेद 7/14)

वह प्रथम संस्कृति ही विश्व के समस्त मानवों के लिए वरणीय है।

**तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।**

(ऋग्वेद 10/90/16)

धर्म के वे अंग–सत्य, संयम, सदाचार, न्याय, दया, क्षमा, परोपकार व अहिंसा आदि शाखा–प्रशाखा के रूप में सर्वप्रथम वेदों में ही वर्णित हैं। संस्कृत साहित्य में विलोम शब्द के रूप में दो शब्दों की जोड़ी सुप्रसिद्ध है – नूतन व पुरातन। कोई मत या मजहब किसी अन्य मत या मजहब की अपेक्षा नूतन होता है तो कोई पुरातन। वैदिक धर्म सनातन है।

किन्तु सृष्टि के प्रारम्भ से निरन्तर प्रवाहित होती आ रही वैदिक धर्म की यह अजस्त्र धारा गंगा की तरह गंगोत्री से निकलकर आज तक सर्वजनहिताय तथा सर्वजनसुखाय है। यह वैदिक धर्म सार्वजनीन, सार्वकालिक, सार्वभौमिक एवं अजातशत्रु है जो निर्विकार एवं निर्दोष होने के कारण समस्त विश्व का सर्वथा शोधन करता है। यही धर्म विश्ववरणीया संस्कृति भी कहलाती है। जब धर्म वैदिक न रहकर अन्य किसी मतपरक विशेषणों से जुड़ने लगता है तो उस समय मौलिक धर्म की उत्कृष्टता अपने आप समाप्त होने लगती है तथा वह तथाकथित धर्म, संकीर्ण, भाव वाला होकर अपने अनुयायियों को सच्ची मानवता से दूर भी करता है।

धर्म निरपेक्षता की अनर्गल व्याख्या ने ही कुकुरमुत्तों की तरह जगह जगह पर उग आए आधुनिक समस्त मत–सम्प्रदायों, पन्थों एवं मजहबों को उदारता एवं समझौतावाद के कारण धर्म और संस्कृति का जामा पहना दिया है। जिसका परिणाम वर्तमान में हम देख रहे हैं–सर्वत्र धार्मिक विद्वेष, साम्प्रदायिक कट्टरता, मजहबी उग्रवाद, अधिक स्वायत्तता की मांगें व युद्ध विभीषिका। इस प्रकार का तथाकथित धर्म स्वयं को उत्कृष्ट एवं अन्य को

गर्हित, हेय व अधम मानता है। ऐसी बात नहीं है कि वैदिक धर्म से पृथक अपनी सत्ता रखने वाले अन्य मतों व मजहबों में कोई अच्छी बात है ही नहीं अपितु इन सभी मतों में जो करूणा, ममता, उदारता, सहानुभूति, सदाचार, अहिंसा आदि गुण हैं वे प्रशंसनीय हैं। समाजों व राष्ट्रों में देश, काल तथा व्यक्ति की प्रवृत्ति के अनुसार खान–पान, रहन–सहन, लोकाचार व पूजा–पद्धतियों में भिन्नता होना स्वाभाविक है, परन्तु उन से धर्म की भिन्नता कदापि नहीं हो सकती।

धर्म सब का एक ही होता है। अध्यात्म से ओत–प्रोत जीवन सत्य, धैर्य, क्षमा, इन्द्रिय–नियन्त्रण, स्वाध्याय, दानकर्ता, परमार्थ, यज्ञमयता, उदारता, पक्षपातहीन, न्याय, अप्रमाद, कर्तव्यपरायणता, उदात्तता, तपस्या, साधना, सन्तोष, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह आदि गुण धर्म के वे शाश्वत अंग हैं जो इन्सान को दानवता से बचाते हुए मानव बनाए रखते हैं। इन्हीं धार्मिक गुणों से एक स्वस्थ समाज व विशाल राष्ट्र की स्थापना हो पाती है।

वैदिक ऋचाएं धर्म को ध्रुव विशेषण से जोड़कर उस की अक्षरता को दर्शाते हुए निश्चित सिद्धान्तों व आचरण के नियमों की ओर संकेत करती हैं –

**मित्रावरूणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्टयै।**

(यजु. 2/3)

वस्तुतः धर्म एवं संस्कृति आदिकाल से चले आ रहे वे शाश्वत मानवीय कर्तव्य हैं जो अनिवार्य रूप से पालन किये जाते हैं। इस धरा के महर्षियों की अमरवाणी केवल इसी लोककल्याण कारिणी धर्म–ध्वनि का ही उच्चारण करती रही है **–धर्मादर्थश्च कामश्च** अर्थ और काम की प्राप्ति धर्मपूर्वक ही करनी चाहिए।

उपनिषत् के ऋषि ने भी धर्म की सार्थकता को लोकोन्नति में ही देखा है। उसने कहा **–त्रयो धर्मस्कन्धाः यज्ञो अध्ययनं दानम्।** (छान्दोग्य उपनिषद् 2/23/1) यज्ञ, अध्ययन एवं दान के माध्यम से उस ने धर्म का व्याख्यान करने का प्रयास किया है। यज्ञ धर्म का पहला अंग है।

सभी श्रेष्ठ कर्म यज्ञ कहलाते हैं अतः कोई भी अच्छा कार्य करने वाला व्यक्ति सच्चा धार्मिक होता है। अध्ययन जीवन को उत्थान की ओर ले जाता है। इसलिए स्वाध्यायप्रेमी व्यक्ति भी धर्म का पालन माना गया है। दान धर्म का वह पड़ाव है जिस से व्यक्ति मानवता से देवत्व की ओर कदम रखता है।

**– डॉ. विक्रम कुमार विवेकी**

# विदेशियों की दृष्टि में गाय

अमेरिका देशवासी टेनेसी प्रान्त के भूतपूर्व गवर्नर श्री मालकम आर. पेटसन लिखते हैं –

महाकवि होमर ने युद्ध, वरजिल ने आयुध, होरेस ने प्रेम, दान्ते ने नरक और मिल्टन ने स्वर्ग का गीत गाया, परन्तु मुझमें यदि इन सब सिद्ध कवियों की सम्मिलित प्रतिभा होती और मेरे हाथ में हजार तारों का मानपूरा होता तथा सारा संसार श्रोता बनकर सुनता तो मैं अपना हृदय खोलकर गौ का गीत गाता, उसके गुण बखानता और उसकी महिमा का गान यावच्चन्द्र दिवाकर अमर कर देता। यदि मैं मूर्तिकार होता और संगमरमर नामक पत्थर में टांकी से अपने विचार मूर्तिकमान कर सकता तो संसार की सब पत्थर की खाने छानकर विमलतम शुभ्रतम संगमरमर की पटियॉ ढूँढ़ लाता और चन्द्र ज्योत्सना से पुलकित, निरभ्र नील आकाश से मण्डित, किसी मनोहर वन में निर्मल जल के समीप, पक्षियों के मधुर गुंजन के बीच बैठकर अपने प्रेम धर्म के पवित्र कर्म में लग जाता। उस शीतल संगमरमर का सारा खुरदरापन अपनी छेनी से छीलकर उसे इतना कोमल बना लेता कि उसमें से मेरे मन की गौ की मूरत निकल आती। उसके विशाल करूणामय नेत्र होते, वह अपने उभरे स्तनों में भरा हुआ पुष्टिकर पेय पान कराने की प्रतीक्षा में खड़ी और प्रेम से अमृत के नेत्र वालों को सुख, आरोग्य एवं बल का आशीर्वाद देती दिख पड़ती। गौ गाना–ताज की महारानी है। उसका राज्य सारी पृथ्वी पर है। सेवा उसका विरद है और जो कुछ लेती है, उसे सौ गुना करके देती है।

यदि आज संसार की गौएं मर जायें तो कल ही मानव जाति पर भयानक संकट आ पड़े। रेल की सड़कें, बैंक, कपास की फसल इन सबके बिना हम लोग मजे में अपना काम चला सकते हैं, परन्तु गौ के बिना मानव जाति रोग, क्षय और अन्त में विनाश को प्राप्त होगी। गौ का हम वह सम्मान और स्तवन करें जिनके वह योग्य है। मुझे आशा है कि ज्यों–ज्यों हम लोग ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ेगें, क्रूरता और स्वास्थपरता छोड़ेंगे, त्यों–त्यों उन गौओं की हत्या करना और उनका मॉस खाना भी छोड़ देगें, जो हमें बल देती, सुख पहुंचाती और हमारे बच्चों के प्राण बचाती है।

मि. राल्फ. ए. होने का कथन है – जो व्यक्ति अपने बाल–बच्चों को दूध मलाई और मक्खन जैसे आरोग्यवर्धक पदार्थ खाने को नहीं देता, उसे जेल में बन्द रखने की जरूरत है।

आगे वे फिर कहते हैं –

यदि आप अपनी सन्तानों को शक्तिशाली बनाना चाहते हैं तो उन्हें गाय का दूध और मक्खन रोज तीन बार खाने को दीजिये।

दक्षिण भारत तथा गुजरात में आजकल दिन में कम से कम 25 बार चाय पिलाई जाती है, दूध तो एक बार भी नहीं मिलता। 90–95 फीसदी बच्चे तोगर्भावस्था से ही चाय के

आदी होकर आते हैं। सत्कार के लिए भी आज चाय पेश की जाती है। चाय रूपी भयंकर विष से आज देश विनष्ट हो रहा है।

फ्रेंक ओ. लोडेन लिखता है – शताब्दियों से कथाओं और उपन्यासों में वर्णित यौवन के उद्‌गम की खोज मनुष्य कर रहा है, पर उस आदर्श यौवन का निकटतम सानिध्य रखने वाला जो पदार्थ अब तक मिल सका है, वह गौ का दुग्ध स्तन है।

डॉ. एच. डी. के. डाइरेक्टर ऑफ नेशनल इन्स्टीट्‌यूट फार रिसर्च इन डेयरिंग (इंग्लैण्ड) लिखते हैं –

राष्ट्र के स्वास्थ्य में यदि सुधार करना है तो दुग्धापान का और दूध से बनी चीजों के अधिक से अधिक व्यवहार का पर्याप्त प्रचार करना चाहिए।

प्रो. एम. जे. ऐसेनो (हारवर्ड मेडिकल स्कूल) कहते हैं –

दूध ही एकमात्र पदार्थ है, जो समस्त पौष्टिक द्रव्यों से परिपूर्ण हैं और जिसे हम पूर्ण भोजन कह सकते हैं। बढ़ते हुए बच्चों के लिए उत्तमता में इससे बढ़कर कोई चीज नहीं। शरीर को ठीक तरह से बढ़ाने और पुष्ट करने में दूध की बराबरी करने वाला कोई दूसरा पदार्थ नहीं है।

अमेरिका के प्रेसीडेंट हर्बर्ट हूवर लिखते हैं – श्वेत जाति के लोगों का भाग्य उनकी गायों के साथ दृढ़ रूप से संकलित है। दुग्धान्नों के बिना वे कभी भी जीवित नहीं रह सकेगें।

डॉ. ई. बी. मैककालग (अमेरिका) लिखते हैं –

जिन लोगों ने कुछ नाम कमाया है, जो अत्यन्त बली और वीर हुए हैं, जिनके समाज में बाल मृत्यु की संख्या बहुत घट गई है, जिन्होंने संसार में व्यापार धन्धे पर अधिकार किया है, जो साहित्य, संगीत कला का आदर करते हैं तथा जो विज्ञान और मानव बुद्धि की प्रत्येक दिशा में प्रगतिमान हैं, वे ऐसे लोग हैं जिन्होंने गाय के दूध और दूध से बने पदार्थों का स्वच्छन्दता से उपयोग किया है।

श्री मिलो हेस्टिंग्स (रूस) लिखते हैं –

गाय ही सभ्य मानव समाज की धाय है। किसी भी देश की सभ्यता की उन्नति का अनुमान करने के कई साधन बताये जाते हैं। कहीं लोग पुस्तकों पर से ही मानव सभ्यता की कल्पना करते हैं, कहीं धम मन्दिरों को ही प्रधानता दी जाती है, तो कहीं बेलों की वृद्धि ही इसका मूल आधार बताया जाता है। किन्तु गाय द्वारा ही संस्कृति का अनुमान लगाया जा सकता है। हमारी सभ्यता तो गौ प्रधान सभ्यता ही है। जहां गौ वंश उन्नत न हो वहां श्वेत जाति की गुजर नहीं हो सकती।

हम चाहते हैं कि रूस में यान्त्रिक हल और गाय का विशेष रूप से प्रचार हो। यदि इन दो विषयों की उन्नति करने में रूस यभ लाभ करे तो रूस को एक स्थायी संस्कृति के प्रवर्तक

का पद गौरव प्राप्त हुए बिना नहीं रह सकता। दुग्ध व्यवसाय की उन्नति के द्वारा हम आनन्द, मेधा शक्ति और समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं। मानव जीवन और सभ्यता का दूध के साथ एक विशेष प्रकार का संबंध है।

यूरोप में दुग्ध व्यवसाय में अग्रणी देश डेनमार्क, हालैंड और स्विटजरलैंड हैं। इनमें से एक देश राष्ट्र संघ का केन्द्र बना है और दूसरा सब राष्ट्रों के न्यायालय का मुख्य स्थान है। गोवंश संस्कृति का निर्माता है या संस्कृति ही गोवंश निर्माण करती है, यह विचार का एक विषय हो सकता है, पर मेरे विचार में दोनों एक साथ ही रहेगें।

गाय मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ हितैषी प्राणी है। तूफान, ओला, अनावृष्टि या बाढ़ आवे और हमारी फसलों को नष्ट करके हमारी आशाओं पर पानी फेर दे, किन्तु फिर भी जो बचेगा, उसी से गाय हमारे लिये पौष्टिक और जीवन धारण करने वाले आहार तैयार कर देगी। उन हजारों बच्चों के लिए तो गाय जीवन ही है, जो दूध रहित वर्तमान नारीत्व की रेती पर पड़े हुए हैं।

हम उसकी सिंघाई, उसके सौन्दर्य तथा उसकी उपयोगिता के लिए उसे प्यार करते हैं। उसकी कृतज्ञता में कभी कमी नहीं आई। हमारे ऊपर दुर्भाग्य का हाथ तो होना ही चाहिए, क्योंकि हम लोग सालों से अपने कर्तव्य से गिर गये हैं। हम जानते हैं कि गाय हमारे एक मित्र के रूप में है जिससे कभी कोई अपराध नहीं हुआ, जो हमारी सेवा का पाई–पाई चुका देती है और घर की तथा देश की रक्षा करती है। यह सर्वथा सत्य है कि –

**गाय मरी तो बचता कौन।**

**गाय बची तो मरता कौन।।**

श्री वाल्टर ए. डामर (अवर डम्ब एनीमल्स अमेरिका) मैं गौ की प्रशंसा करूँगा, किन्तु यों ही साधारण दृष्टि से नहीं, वरन् इसलिये कि वह इसकी अधिकारिणी है और ऐसा करना हमारा कर्तव्य है। मैं गाय को भगवत् सृष्टि के चर–प्राणियों में एक ऊँचे आदरणीय स्थान पर खड़ी देखना चाहूंगा। गाय से बढ़कर अन्य कोई भी मनुष्य का मित्र नहीं है और न गाय जैसा कोई मधुर स्वभाव वाला है। अपने दीप्त, शान्त और ध्यान निमग्न नेत्रों से संसार को देखने वाली गाय के सौम्य रूप में सचमुच देवत्व भरा है। उसमें एक महत्ता और भव्यता है, जो ग्राम देवता के उपयुक्त है। उसमें शत प्रतिशत मातृत्व है और उसका मनुष्य जाति से माता का सम्बन्ध है।

मैं यह नहीं मानता कि गाय एक उदास, अबोध और व्यक्तित्व शून्य प्राणी है, किन्तु ऐसा न मानने वाले किसी संशययुक्त मनुष्य को यह मनाना भी मेरे लिए कठिन है। जब तक मनुष्य अपने पशु–मित्रों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार न करेगा, तब तक वह उनकी अत्यन्त प्रिय मनोरम विशेषताओं के विषय में सदा अन्धेरे में ही रहेगा।

**– साभार, पाणिनी प्रभा**

समाचार...

# अखिल भारतीय वेद संगोष्ठी सम्पन्न

आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम म.प्र. में विद्वत गोष्ठी दिनांक 10 से 12 जून 2025 में सम्पन्न हुई। गोष्ठी वेद के अनेक गूढ़ विषयों पर विचार विमर्श एवं उन पर प्रचिलित विभिन्न विचारों के मंथन को लेकर आयोजित की गई थी।

इसमें देश के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान पधारे थे। पांच सत्रों में निर्धारित अपने विषयों पर विद्वता पूर्ण व्याख्यान पहली बार बड़ी संख्या में उपस्थित श्रोताओं ने सुने। प्रवक्ता में मुख्य रूप से डॉ वेदपाल जी मेरठ, आचार्य धुरन्धर जी, डॉ. आचार्या सूर्यादेवी जी चतुर्वेदा डॉ. अखिलेश जी शर्मा विरेन्द्र पाण्डेय, आचार्य योगेन्द्र जी शास्त्री, आचार्य आनन्द पुरूषार्थी के उदबोधन हुए।

इस अवसर पर 10 जून को आचार्य सत्यसिन्धू जी का 60 वां और स्वामी ऋतस्पति जी परिव्राजक का 12/06/25 को 71 वां वर्षगांठ थी। जिसे उपस्थित आगन्तुक जनों ने बड़े उत्साह के साथ मनाया।

# रतलाम संभाग की आर्य समाजों में हुए कार्यक्रमों की जानकारी

1. आर्य समाज बरखेड़ा पंथ में 30/04/25 चैत्र प्रतिपदा पर आर्य समाज का 150 वां स्थापना दिवस मनाया गया। प्रातः 7 बजे गॉव में प्रभात फेरी निकाली गई। 8 से 9 बजे यज्ञ किया यज्ञ के ब्रह्मा सत्येन्द्र जी आर्य थे। पश्चात 9 से 11 बजे तक बौद्धिक कार्यक्रम रखा। कार्यक्रम के अध्यक्ष संभाग के प्रधान बंशीलाल आर्य थे।

2. आर्य समाज नीमच में दिनांक 28.04.25 को महर्षि दयानंद की 200 वीं जयंती एवं आर्य समाज के 150 वे स्थापना एवं नीमच आर्य समाज के 101 वें स्थापना दिवस के अवसर पर आर्य समाज परिवार मिलन समारोह का कार्यक्रम रखा गया। प्रातः 9 से 10 बजे तक यज्ञ के ब्रह्मा मुकेश जी आर्य विशेष अतिथि बंशीलाल जी आर्य, राजेश जी नारकोटिक्स आयुक्त नीमच थे।

3. आर्य समाज नारायणगढ़ में महर्षि दयानंद की 200 वीं जयंती एवं आर्य समाज

के 150 वे स्थापना पर दैनिक यज्ञ, योगासन, एवं अस्त्र शस्त्र का अभ्यास 01 मई से 31 मई तक रखा गया। करीब 100 बालक / बालिकाओं ने एक माह प्रशिक्षण लिया। पश्चात नगर परिषद की अध्यक्षिका, बंशीलाल जी आर्य, बद्रीलाल जी एवं सत्येन्द्र जी ने बालक बालिकाओं को पुरस्कार वितरीत किए। शान्तीपाठ के बाद सामुहिक भोजन कराया।

4. आर्य समाज बूढ़ा में दिनांक 26 से 28 मई 2025 तक यज्ञ चिकित्सक डॉ कमलनाथ जी आर्य पतंजली, स्वामी यज्ञदेव जी तथा बम्बई से आचार्य अरूण कुमार जी आर्य ने दैनिक यज्ञ की विधि महत्व लाभ एवं वैज्ञानिक महत्व मंत्रों का शुद्ध उच्चारण यज्ञ से विभिन्न रोगों का उपचार की जानकारी प्रातः 7 से 9.30 तक एवं रात्रि में 8 से 10 भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम में श्री राजीव जी गुलाटी, पं. काशीरामजी अनल, एवं श्री जितेन्द्र जी भाटिया दिल्ली थे।

उपरोक्त जानकारी रतलाम संभाग के प्रधान बंशीलाल जी आर्य ने दी।

# आर्य समाजों से शीघ्र प्रतिनिधि चित्र और दशांष की अपील

प्रान्त की कुछ आर्य समाजों ने अभी तक अपनी आर्य समाज का प्रतिनिधि चित्र एवं दशांष राशि नहीं भेजी हैं। कृपया यथा शीघ्र भेजें।

# जिन आर्य समाजों के निर्वाजन अभी तक सम्पन्न हो चुके की सूचना प्राप्त है

इन्दौर संभाग की आर्य समाजों में महू, भागीरथ पुरा इन्दौर, राऊ, दयानंदगंज इन्दौर, कोदरिया, धार, नान्द्रा, कुआ, मुल्ठान, कसरावद में नगर आर्य समाज श्रद्धानन्द, आर्य समाज सनावद, बोरखेडी, मूसाखेड़ी में निर्वाचन हुए सम्पन्न।

रतलाम संभाग की आर्य समाजों में रेल्वे कांलोनी रतलाम, धानमंडी रतलाम, मन्दसौर, बूढ़ा, खेडाखदान, पिपल्यामण्डी, बरखेडापंच नैनोरा, देहरी, गरोठ, बालागुढ़ा

उज्जैन संभाग की आर्य समाजों में शाजापुर, उज्जैन, सुवासा, बड़नगर, विक्रमपुर मौलाना, चापड़ा, खरसोंदकलां।

भोपाल संभाग की आर्य समाजों में निपानिया कंला, मुहाली, सुभाष नगर सिहोर, गंजबसौदा, टी.टी नगर भोपाल, महावीर नगर, पिपलानी।

ग्वालियर संभाग की आर्य समाजों में गंगा विहार गोले का मंदिर ग्वालियर, डबरा, गौसपुरा, मुरार, चित्रगुप्तगंज लश्कर ग्वालियर कईं समाजों में निर्वाचन हो चुके हैं किन्तु अभी तक प्रतिनिधि चित्र न आने से उनका उल्लेख नहीं हैं।

# सभा की प्रान्तीय सम्मेलन तिथियां निश्चित

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक 29.06.25 में प्रान्तीय सम्मेलन की पूर्व से निर्धारित तिथियो में परिवर्तन कर दिनांक 21 से 23 दिसम्बर 2025 निश्चित की गई। कार्यक्रम भोपाल में विशाल व भव्य स्तर पर मनाया जावेगा। प्रान्त की प्रत्येक आर्य समाज व सदस्यों को इसमें सम्मिलित होकर इसे सफल बनाना हैं। इस अवसर पर देश के प्रसिद्ध विद्वान, भजनोपदेशक और आर्य समाज प्रमुख महानुभावों को आमन्त्रित किया जावेगा। विभिन्न सत्रों में मुख्यतः वेद सम्मेलन, कार्यकर्ता सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आदि के अतिरिक्त समिति द्वारा निर्धारित कार्यक्रमों का आयोजन होगा।

कार्यक्रम भव्य हो, सार्थक हो, रचनात्मक दृष्टिकोण से बनाने हेतु विचार निम्न पते पर आमन्त्रित हैं। कृपया अभी से तिथियां निश्चित कर सहयोगी बनें।

**अतुल वर्मा – सभामंत्री**

# महू में पाँच दिवसीय 14 वाँ गायत्री महायज्ञ

प्रति दो वर्ष में होने वाले गायत्री महायज्ञ हेतु प्रमुख कार्यकर्ताओं की दो बैठक सम्पन्न हो चुकी हैं। बैठक में पांच दिवसीय आयोजन 31 दिसम्बर 2025 से 4 जनवरी 2026 तक मनाया जाना निश्चित हुआ हैं।

कार्यक्रम में भारत के प्रसिद्ध विद्वान, यज्ञ के ब्रह्मा महिला विदूषी, भजनोपदेशक आमन्त्रित किए जा रहे हैं। कार्यक्रम भव्य एवं विशाल होगा जिसमें समाज राष्ट्र अध्यात्म एवं जीवन उन्नति के बिन्दुओं पर विद्वानों को सुनने का अवसर मिलेगा।

समिति ने सभी धर्म प्रेमी महानुभावों माताओं बहनों से कार्यक्रम में सहयोगी बनने की अपील की हैं।

# विवाह संस्कार हेतु वधू की तलाश

नाम – पारितोष मैहर
पिता – श्री बाबु मैहर
जन्म दिनांक – 18.01.1990 समय 3.37 पी.एम स्थान उज्जैन
हाईट – 5.8 फीट
शिक्षा – पी.एच.डी. डॉक्टरेट एजुकेशन इन डिटेल्स, माइक्रो इलेक्ट्रानिक्स
व्यवसाय – मारक्रोन टेक्नांलाजी आई.टी. कम्पनी हैदराबाद
प्रतिवर्ष इनकम – 12 लाख
पारिवारिक जानकारी – एक बेटी अविवाहित
सम्पर्क – 9302323511 – ई मेल **blmeihar@gmail.com**
पता – ए.एच–32 कादम्बरी नगर हाउसिंग बोर्ड कांलोनी नगर परिषद राऊ जिला इन्दौर

# श्री शिवकुमार जी चौधरी का देहावसान

प्रतिभा सिन्टेक्स के चेयरमेन देश के प्रसिद्ध व्यवसायी एवं आर्य समाज के अनेक संस्थाओं के सहयोगी श्री शिवकुमार जी चौधरी लम्बी अस्वस्थता के पश्चात हमारे बीच नहीं रहें। दिनांक 18 जून 2025 को प्रातः उनका देहान्त हो गया। श्री चौधरी आर्य समाज व वैदिक धर्म के प्रति गहन निष्ठा रखते थे और बड़े सहयोगी रहे। महर्षि दयानंद कन्या गुरूकुमोहन बड़ोदिया के संरक्षक समिति के आप सम्मानीय सदस्य थे। आपकी कमी समाज की बड़ी क्षति हैं।

दिवंगत जन हेतु ईश्वर से सदगति की प्रार्थना करते हुए प्रान्त की सभी आर्य समाजों की ओर से व अन्तरंग सभा दिनांक 29.06.25 को दिवंगत चौधरी साहब को विनम्र श्रद्धाजंली दी गई।

# श्री चम्पालाल जी अजमेरा का देहावसान

श्री चम्पालाल जी अजमेरा आर्य वीर दल के प्रान्तीय अधिष्ठाता रहे और ग्रामीण क्षेत्र में उनके माध्यम से आर्य वीर दल के कार्य को गति मिली। उनकी क्षति समाज की एक बड़ी क्षति है, प्रान्तीय सभा की और से विनम्र श्रद्धाजंली।

ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की

# 200वीं जयंती

आर्यसमाज स्थापना के

## 150वें वर्ष

के अवसर पर

## विश्व के इतिहास में अब तक का सबसे विशाल

# सार्द्ध शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नई दिल्ली

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

## 30 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025

तदनुसार कार्तिक शुक्ल 8, 9, 10, 11 विक्रमी 2082

## तिथियां सुरक्षित कर लेवें एवं सबको सूचित करें।

- ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति
- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001

## विनम्र आग्रह

# कृपया गुरुकुल की अन्नपूर्णा योजना के सदस्य बनें

परमात्मा की कृपा से सत्य सनातन धर्म की शिक्षा के प्रचार प्रसार का एक केन्द्र महर्षि दयानन्द कन्या गुरूकुल मोहन बड़ोदिया भी हैं। वर्तमान सत्र में लगभग 80 से 85 कन्यायें शिक्षा प्राप्त करेगी। गुरूकुल में कन्याओं की स्थायी भोजन व्यवस्था के लिए एक योजना चल रही हैं । इस योजना हेतु रूपये 11000/– की राशि एक बार दान स्वरूप भेंट की जाती हैं। दानदाता की यह राशि बैंक में उनके नाम से स्थायी जमा (फिक्स डिपाजिट) करदी जाती हैं। ऐसी जमा राशि के ब्याज से कन्याओं के भोजन की व्यवस्था हो यह प्रयास हैं। अभी 200 से अधिक दानी महानुभावों ने अपना सात्विक योगदान प्रदान कर दिया हैं।

धर्मप्रेमी महानुभावों, माताओं बहनों से अनुरोध है कृपया आप भी इस पवित्र कार्य में सहयोगी बनें।

**विशेष**–गुरूकुल को देय राशि आयकर विभाग से कर मुक्त सुविधा प्राप्त हैं।

यदि राशि सीधे बैंक में जमा करवावें तो हमें निम्नलिखित नंबरो पर सूचित करें या गुरुकुल का बारकोड स्केन कर सीधे ऑनलाईन राशि बैंक अकाउंट में ट्रांसफर कर हमें अवश्य सूचित करें।

---

**बारकोड**

कृपया राशि देकर
इन नंबरो
पर सूचित करें।

**98266 55117**
**62611 86451**
**78289 66977**
**98936 05244**

## महर्षि दयानंद कन्या गुरुकुल समिति

AC. No. 95632011000171
Ifsc. BKID0009563 Bank of India
Branch. Kanad

# प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है, ईश्वर वही है जो सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य
...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।
महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥
सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥
प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
आर्य समाज

# मानव कल्याणार्थ

## ❋ आर्य समाज के दस नियम ❋

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2021-25

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

**मुद्रक, प्रकाशक, प्रकाश आर्य द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर**
**मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक - अतुल वर्मा, भोपाल**